



Sample

01 Apr 1987

10:15 AM

Delhi

Model: Web-MyKundli

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : [contact@horoscopecart.com](mailto:contact@horoscopecart.com)**

**Website : [www.horoscopecart.com](http://www.horoscopecart.com)**

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 01/04/1987  
दिन \_\_\_\_\_: बुधवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 10:15:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 10:06:41 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Delhi  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 28:39:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 77:13:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:21:08 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 09:53:52 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:04:04 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 22:29:56 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:12:19 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:38:35 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:26:16 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 17:15:17 मीन  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 28:04:11 वृष

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: वृष - शुक्र  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: मेष - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: भरणी - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शुक्र  
योग \_\_\_\_\_: विष्कुम्भ  
करण \_\_\_\_\_: गर  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: गज  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: चतुष्पाद  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: पूर्व  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: लू-लूनेश  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - स्वर्ण  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मेष



**HoroscopeCart**

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	चैत्र	11
पंजाबी	संवत : 2043	चैत्र	19
बंगाली	सन् : 1393	चैत्र	17
तमिल	संवत : 2043	पंगुनी	18
केरल	कोल्लम : 1162	मीनम	18
नेपाली	संवत : 2043	चैत्र	18
चैत्रादि	संवत : 2044	चैत्र	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2044	चैत्र	शुक्ल 3

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 3  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 17:19:38  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 3  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : भरणी  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 23:14:49 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : भरणी  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 21:16:06 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : गर  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 17:19:38 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : गर  
भयात \_\_\_\_\_ : 30:08:31  
भभोग \_\_\_\_\_ : 62:38:03  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शुक्र 10 वर्ष 3 मा 23 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : कार्तिक  
तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
दिन \_\_\_\_\_ : रविवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मघा  
योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
करण \_\_\_\_\_ : बव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : सिंह  
लग्न \_\_\_\_\_ : मेष  
सूर्य \_\_\_\_\_ : कर्क  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मेष  
मंगल \_\_\_\_\_ : सिंह  
बुध \_\_\_\_\_ : वृष  
गुरु \_\_\_\_\_ : कन्या  
शुक्र \_\_\_\_\_ : तुला  
शनि \_\_\_\_\_ : मिथुन  
राहु \_\_\_\_\_ : वृश्चिक



HoroscopeCart

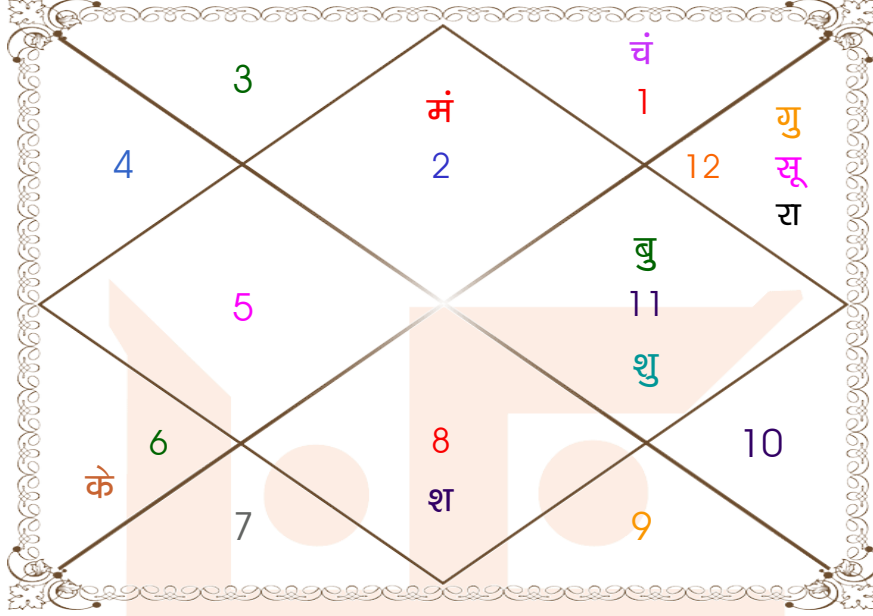
Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

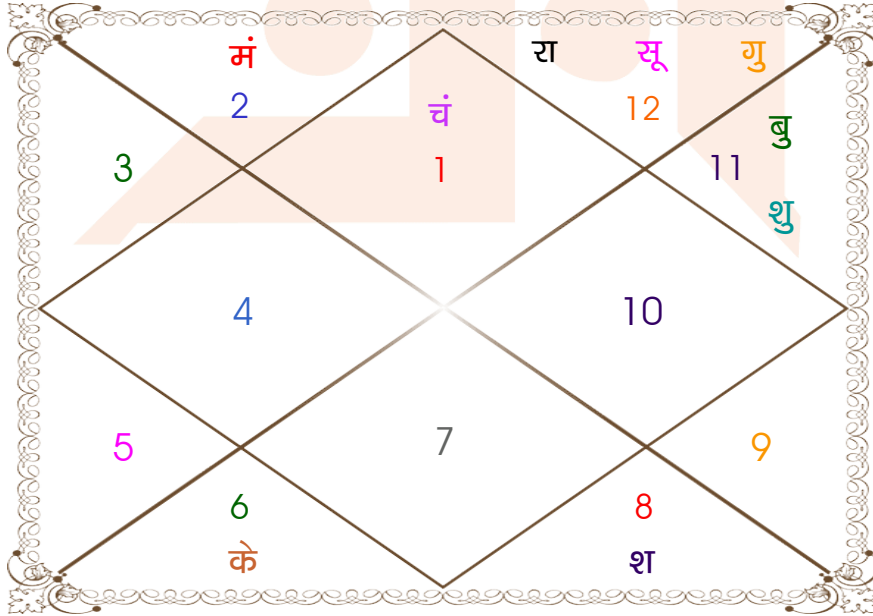
Website : www.horoscopecart.com

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : [contact@horoscopecart.com](mailto:contact@horoscopecart.com)

Website : [www.horoscopecart.com](http://www.horoscopecart.com)

## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

रा सू गु	चं	मं ल	
शु बु			
	श		के

### लग्न कुंडली

मं ल	चं	गु सू	रा शु बु
के			श

विंशोत्तरी  
शुक्र 10वर्ष 3मा 23दि  
शुक्र

01/04/1987

24/07/2097

शुक्र	24/07/1997
सूर्य	24/07/2003
चन्द्र	24/07/2013
मंगल	24/07/2020
राहु	24/07/2038
गुरु	24/07/2054
शनि	24/07/2073
बुध	24/07/2090
केतु	24/07/2097

योगिनी

भद्रिका 2वर्ष 6मा 28दि  
भद्रिका

28/10/2020

29/10/2025

भद्रिका	09/07/2021
उल्का	09/05/2022
सिद्धा	30/04/2023
संकटा	08/06/2024
मंगला	29/07/2024
पिंगला	08/11/2024
धान्या	09/04/2025
भामरी	29/10/2025



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



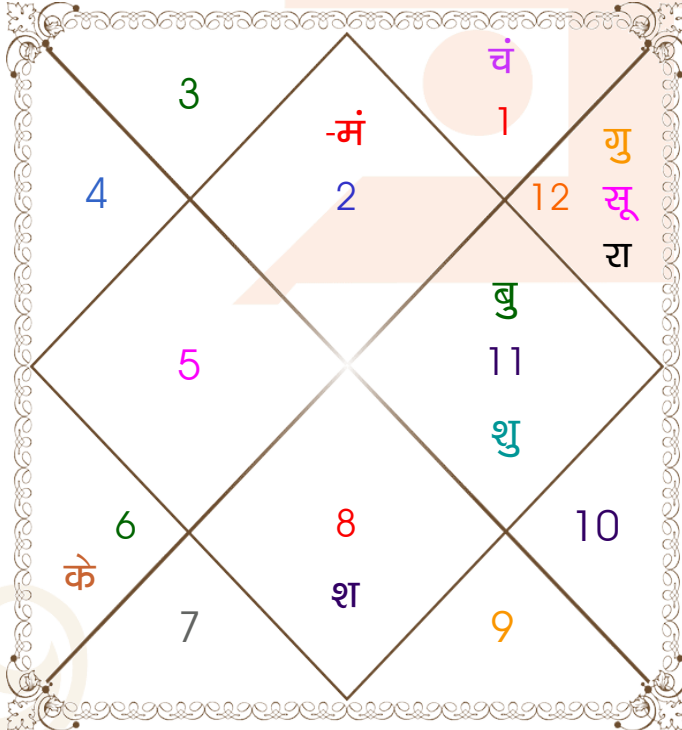
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	28:04:11	345:17:04	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	---
सूर्य			मीन	17:15:17	00:59:15	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			मेष	19:47:27	12:46:39	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	सम राशि
मंगल			वृष	03:18:12	00:40:22	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	शनि	सम राशि
बुध			कुंभ	20:06:38	01:12:35	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	सम राशि
गुरु		अ	मीन	13:24:03	00:14:31	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	स्वराशि
शुक्र			कुंभ	10:31:38	01:11:47	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	मित्र राशि
शनि		व	वृश्चि	27:29:04	00:00:06	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मीन	17:49:18	00:00:09	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
केतु			कन्या	17:49:18	00:00:09	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	03:03:01	00:00:00	मूल	1	19	गुरु	केतु	सूर्य	---
नेप			धनु	14:18:12	00:00:18	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो		व	तुला	15:39:45	00:01:26	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
दशम भाव			कुंभ	12:00:22	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	शनि	--

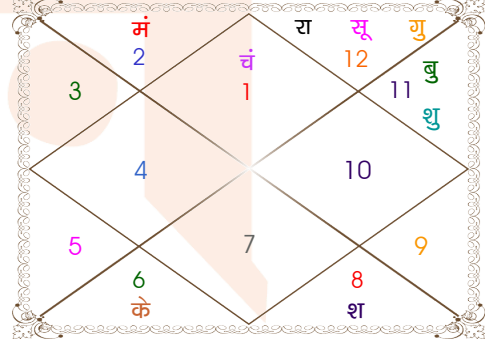
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:40

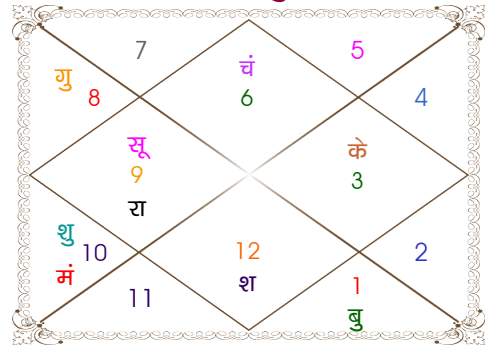
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 10:23:33	वृष 28:04:11
2	मिथुन 10:23:33	मिथुन 22:42:55
3	कर्क 05:02:16	कर्क 17:21:38
4	कर्क 29:41:00	सिंह 12:00:22
5	सिंह 29:41:00	कन्या 17:21:38
6	तुला 05:02:16	तुला 22:42:55
7	वृश्चिक 10:23:33	वृश्चिक 28:04:11
8	धनु 10:23:33	धनु 22:42:55
9	मकर 05:02:16	मकर 17:21:38
10	मकर 29:41:00	कुम्भ 12:00:22
11	कुम्भ 29:41:00	मीन 17:21:38
12	मेष 05:02:16	मेष 22:42:55

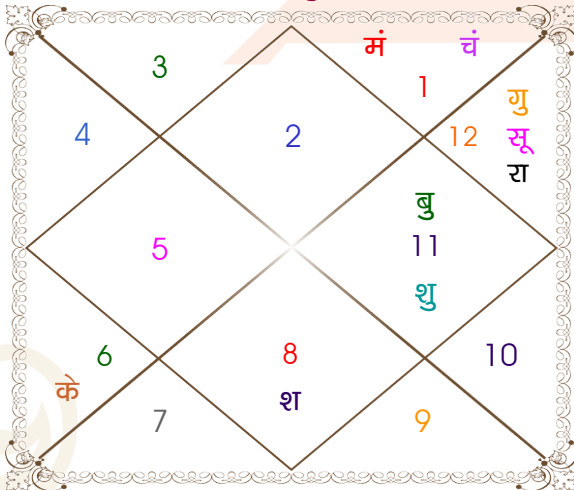
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष 28:04:11	28:04:11
2	मिथुन 21:17:32	21:17:32
3	कर्क 14:49:03	14:49:03
4	सिंह 12:00:22	12:00:22
5	कन्या 15:09:55	15:09:55
6	तुला 22:33:41	22:33:41
7	वृश्चिक 28:04:11	28:04:11
8	धनु 21:17:32	21:17:32
9	मकर 14:49:03	14:49:03
10	कुम्भ 12:00:22	12:00:22
11	मीन 15:09:55	15:09:55
12	मेष 22:33:41	22:33:41

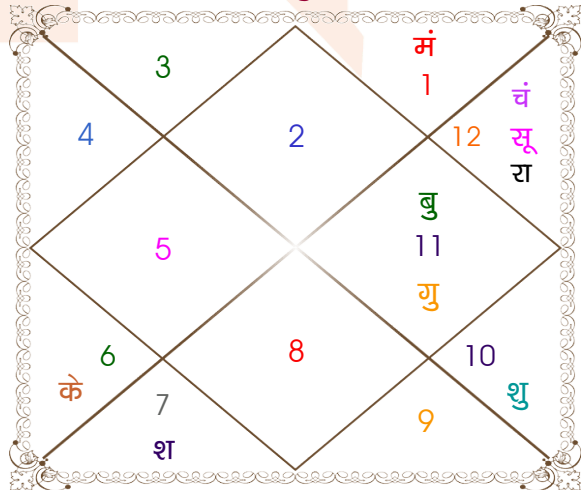
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 10 वर्ष 3 मास 23 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
01/04/1987	24/07/1997	24/07/2003	24/07/2013	24/07/2020
24/07/1997	24/07/2003	24/07/2013	24/07/2020	24/07/2038
00/00/0000	सूर्य 11/11/1997	चंद्र 24/05/2004	मंगल 20/12/2013	राहु 06/04/2023
00/00/0000	चंद्र 12/05/1998	मंगल 23/12/2004	राहु 08/01/2015	गुरु 29/08/2025
00/00/0000	मंगल 17/09/1998	राहु 24/06/2006	गुरु 15/12/2015	शनि 05/07/2028
01/04/1987	राहु 12/08/1999	गुरु 24/10/2007	शनि 22/01/2017	बुध 23/01/2031
राहु 23/09/1987	गुरु 30/05/2000	शनि 24/05/2009	बुध 20/01/2018	केतु 10/02/2032
गुरु 24/05/1990	शनि 12/05/2001	बुध 24/10/2010	केतु 18/06/2018	शुक्र 10/02/2035
शनि 24/07/1993	बुध 18/03/2002	केतु 25/05/2011	शुक्र 18/08/2019	सूर्य 05/01/2036
बुध 24/05/1996	केतु 24/07/2002	शुक्र 22/01/2013	सूर्य 24/12/2019	चंद्र 06/07/2037
केतु 24/07/1997	शुक्र 24/07/2003	सूर्य 24/07/2013	चंद्र 24/07/2020	मंगल 24/07/2038

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
24/07/2038	24/07/2054	24/07/2073	24/07/2090	24/07/2097
24/07/2054	24/07/2073	24/07/2090	24/07/2097	00/00/0000
गुरु 10/09/2040	शनि 27/07/2057	बुध 21/12/2075	केतु 20/12/2090	शुक्र 23/11/2100
शनि 25/03/2043	बुध 05/04/2060	केतु 17/12/2076	शुक्र 19/02/2092	सूर्य 24/11/2101
बुध 30/06/2045	केतु 15/05/2061	शुक्र 18/10/2079	सूर्य 26/06/2092	चंद्र 25/07/2103
केतु 06/06/2046	शुक्र 15/07/2064	सूर्य 23/08/2080	चंद्र 25/01/2093	मंगल 24/09/2104
शुक्र 04/02/2049	सूर्य 27/06/2065	चंद्र 23/01/2082	मंगल 24/06/2093	राहु 02/04/2107
सूर्य 23/11/2049	चंद्र 26/01/2067	मंगल 20/01/2083	राहु 12/07/2094	00/00/0000
चंद्र 25/03/2051	मंगल 06/03/2068	राहु 08/08/2085	गुरु 18/06/2095	00/00/0000
मंगल 29/02/2052	राहु 11/01/2071	गुरु 14/11/2087	शनि 27/07/2096	00/00/0000
राहु 24/07/2054	गुरु 24/07/2073	शनि 24/07/2090	बुध 24/07/2097	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 10 वर्ष 4 मा 15 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु
01/04/1987	23/09/1987	24/05/1990	24/07/1993	24/05/1996
23/09/1987	24/05/1990	24/07/1993	24/05/1996	24/07/1997
00/00/0000	गुरु 31/01/1988	शनि 23/11/1990	बुध 18/12/1993	केतु 18/06/1996
00/00/0000	शनि 03/07/1988	बुध 06/05/1991	केतु 16/02/1994	शुक्र 28/08/1996
00/00/0000	बुध 18/11/1988	केतु 13/07/1991	शुक्र 07/08/1994	सूर्य 18/09/1996
00/00/0000	केतु 14/01/1989	शुक्र 22/01/1992	सूर्य 28/09/1994	चंद्र 24/10/1996
00/00/0000	शुक्र 26/06/1989	सूर्य 19/03/1992	चंद्र 23/12/1994	मंगल 17/11/1996
01/04/1987	सूर्य 13/08/1989	चंद्र 24/06/1992	मंगल 22/02/1995	राहु 20/01/1997
सूर्य 21/04/1987	चंद्र 02/11/1989	मंगल 30/08/1992	राहु 27/07/1995	गुरु 18/03/1997
चंद्र 21/07/1987	मंगल 29/12/1989	राहु 20/02/1993	गुरु 12/12/1995	शनि 25/05/1997
मंगल 23/09/1987	राहु 24/05/1990	गुरु 24/07/1993	शनि 24/05/1996	बुध 24/07/1997

सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल	सूर्य - राहु	सूर्य - गुरु
24/07/1997	11/11/1997	12/05/1998	17/09/1998	12/08/1999
11/11/1997	12/05/1998	17/09/1998	12/08/1999	30/05/2000
सूर्य 29/07/1997	चंद्र 26/11/1997	मंगल 20/05/1998	राहु 05/11/1998	गुरु 20/09/1999
चंद्र 08/08/1997	मंगल 06/12/1997	राहु 08/06/1998	गुरु 19/12/1998	शनि 05/11/1999
मंगल 14/08/1997	राहु 03/01/1998	गुरु 25/06/1998	शनि 09/02/1999	बुध 16/12/1999
राहु 30/08/1997	गुरु 27/01/1998	शनि 15/07/1998	बुध 28/03/1999	केतु 02/01/2000
गुरु 14/09/1997	शनि 25/02/1998	बुध 02/08/1998	केतु 16/04/1999	शुक्र 20/02/2000
शनि 01/10/1997	बुध 23/03/1998	केतु 10/08/1998	शुक्र 10/06/1999	सूर्य 06/03/2000
बुध 17/10/1997	केतु 03/04/1998	शुक्र 31/08/1998	सूर्य 26/06/1999	चंद्र 30/03/2000
केतु 23/10/1997	शुक्र 03/05/1998	सूर्य 06/09/1998	चंद्र 24/07/1999	मंगल 16/04/2000
शुक्र 11/11/1997	सूर्य 12/05/1998	चंद्र 17/09/1998	मंगल 12/08/1999	राहु 30/05/2000

सूर्य - शनि	सूर्य - बुध	सूर्य - केतु	सूर्य - शुक्र	चंद्र - चंद्र
30/05/2000	12/05/2001	18/03/2002	24/07/2002	24/07/2003
12/05/2001	18/03/2002	24/07/2002	24/07/2003	24/05/2004
शनि 24/07/2000	बुध 25/06/2001	केतु 26/03/2002	शुक्र 23/09/2002	चंद्र 19/08/2003
बुध 11/09/2000	केतु 13/07/2001	शुक्र 16/04/2002	सूर्य 11/10/2002	मंगल 06/09/2003
केतु 01/10/2000	शुक्र 03/09/2001	सूर्य 23/04/2002	चंद्र 11/11/2002	राहु 21/10/2003
शुक्र 28/11/2000	सूर्य 18/09/2001	चंद्र 03/05/2002	मंगल 02/12/2002	गुरु 01/12/2003
सूर्य 15/12/2000	चंद्र 14/10/2001	मंगल 11/05/2002	राहु 26/01/2003	शनि 18/01/2004
चंद्र 13/01/2001	मंगल 01/11/2001	राहु 30/05/2002	गुरु 16/03/2003	बुध 01/03/2004
मंगल 03/02/2001	राहु 18/12/2001	गुरु 16/06/2002	शनि 12/05/2003	केतु 19/03/2004
राहु 27/03/2001	गुरु 28/01/2002	शनि 06/07/2002	बुध 03/07/2003	शुक्र 09/05/2004
गुरु 12/05/2001	शनि 18/03/2002	बुध 24/07/2002	केतु 24/07/2003	सूर्य 24/05/2004



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 3
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : [contact@horoscopecart.com](mailto:contact@horoscopecart.com)

Website : [www.horoscopecart.com](http://www.horoscopecart.com)

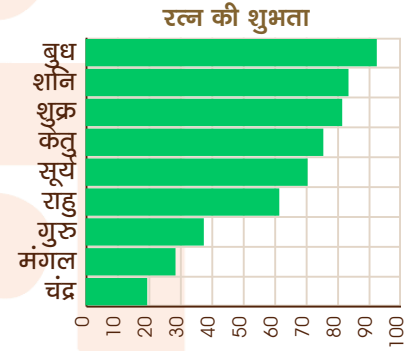


## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	92%	व्यावसायिक उन्नति, धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	83%	दम्पति, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	81%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	75%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	70%	धनार्जन, सुख
गोमेद	राहु	61%	धनार्जन
पुखराज	गुरु	37%	हानि, दुर्घटना
मूंगा	मंगल	28%	रोग, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	19%	व्यय, पराक्रम हानि



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	24/07/1997	58%	0%	28%	98%	37%	94%	89%	67%	81%
सूर्य	24/07/2003	83%	31%	41%	92%	49%	69%	70%	47%	62%
चंद्र	24/07/2013	77%	44%	28%	98%	37%	81%	83%	47%	62%
मंगल	24/07/2020	77%	31%	52%	80%	49%	81%	83%	47%	81%
राहु	24/07/2038	58%	0%	3%	92%	37%	88%	89%	73%	62%
गुरु	24/07/2054	77%	31%	41%	80%	56%	69%	83%	61%	75%
शनि	24/07/2073	58%	0%	3%	98%	37%	88%	95%	67%	62%
बुध	24/07/2090	77%	0%	28%	100%	37%	88%	83%	61%	75%
केतु	24/07/2097	58%	0%	41%	92%	37%	88%	70%	47%	88%



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

## साढेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	01/04/1987-17/12/1987	-----	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	-----
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दाम्पत्य कलह
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ॥**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा अंगुली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : contact@horoscopecart.com**

**Website : www.horoscopecart.com**



## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरान्त आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात् आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा जीवन



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : contact@horoscopecart.com**

**Website : www.horoscopecart.com**

में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : [contact@horoscopecart.com](mailto:contact@horoscopecart.com)**

**Website : [www.horoscopecart.com](http://www.horoscopecart.com)**

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरघः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : [contact@horoscopecart.com](mailto:contact@horoscopecart.com)

Website : [www.horoscopecart.com](http://www.horoscopecart.com)

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंड़े जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : contact@horoscopecart.com**

**Website : www.horoscopecart.com**

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : contact@horoscopecart.com**

**Website : www.horoscopecart.com**

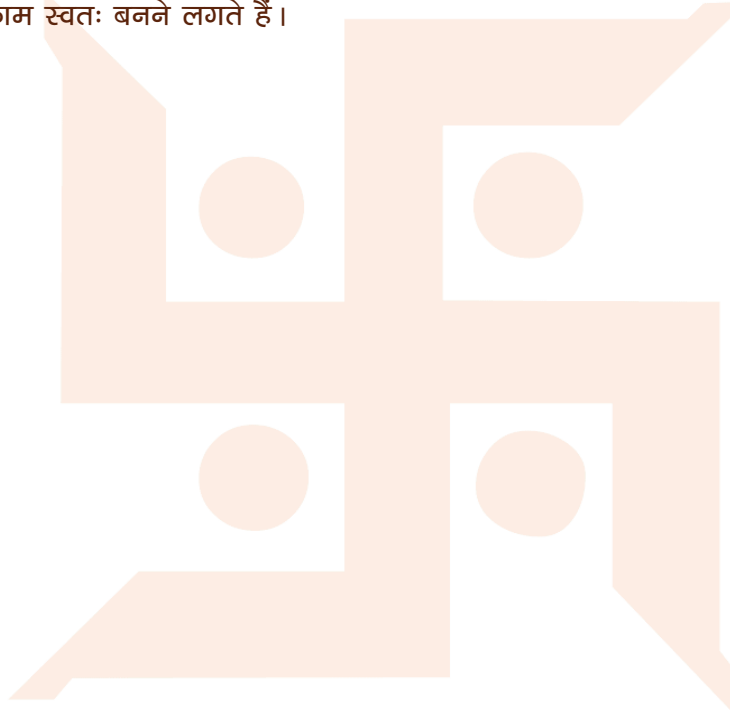


प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह खयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : [contact@horoscopecart.com](mailto:contact@horoscopecart.com)**

**Website : [www.horoscopecart.com](http://www.horoscopecart.com)**

## ग्रह फल

### सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : [contact@horoscopecart.com](mailto:contact@horoscopecart.com)

Website : [www.horoscopecart.com](http://www.horoscopecart.com)

## मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, कूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं कूर होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

## बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

## गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्बुद्धि, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

## शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दयालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com



कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

### शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरधृदय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

### राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

### केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : [contact@horoscopecart.com](mailto:contact@horoscopecart.com)**

**Website : [www.horoscopecart.com](http://www.horoscopecart.com)**

## दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु  
( 24/07/2020 - 24/07/2038 )

राहु की महादशा 24/07/2020 को आरम्भ और 24/07/2038 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष। आपकी जन्मकण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपके जीवनचर्या में उन्नति, भाई-बहनों तथा सम्बन्धियों से लाभ, छोटी यात्रा तथा शक्ति में वृद्धि होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा इच्छाओं की पूर्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सुखी तथा आशावादी होंगे। राहु के कारण आपको हर तरह की भोजन के मामले में हर तरह की अतिशयता से बचना चाहिए। गरिष्ठ भोजन से बचें। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन क्रिया में गड़बड़ी, चर्मरोग, पित्त से सम्बन्धित रोग, बुखार, कान तथा निचली भुजा में कष्ट हो सकता है। सावधानी बरतने से इनमें से अधिकांश बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपके पास धन होगा, आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे और निवेश तथा सद्दा लाभदायक होगा। इस अवधि में आपको सम्पत्ति, समृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा। आपकी अनेक इच्छाएं आकांक्षाएं पूरी हो सकती हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेखा, कम्प्यूटर, खेल, पराविज्ञान तथा जलसेवा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, एण्टीबायोटिक दवाओं, चमड़े के सामान, लोहा और इस्पात आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को विरोधियों पर विजय, कार्यस्थान में अनुकूल स्थिति, लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके सहकर्मी तथा अधीनस्थ कर्मचारी आपके सहयोगी होंगे। आपका स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आर्थिक समृद्धि तथा महत्वाकांक्षा की पूर्ति और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आवास में परिवर्तन सम्भव है। जमीन-जायदाद के मामलों में हानि कम करने के लिए सावधानी बरतना चाहिए। आप वाहन खरीद सकते हैं। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु लाभदायक यात्रा होगी। शुक्र तथा शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने महत्वाकांक्षा की पूर्ति करेंगे। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। अर्थशास्त्र, दवा, प्रबन्धन,



HoroscopeCart

Mobile / WhatsApp : +91-7835830918

E-Mail : contact@horoscopecart.com

Website : www.horoscopecart.com

इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप पराविज्ञान, खेल, दर्शनशास्त्र आदि में रुचि रखते हैं और शिक्षा से अलग गतिविधियों में आगे बढ़ेंगे।

**परिवार :**

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे आपकी खुशी के साधन होंगे। आपके जीवनसाथी को सुख, निवेश तथा सट्टे में सफलता, समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी अचानक छोटी यात्रा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि आपके पिता को संबंधियों से लाभ मिलेगा और यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, सम्पत्ति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

**अन्तर्दशा :**

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सम्पत्ति-समृद्धि की प्राप्ति और इच्छाओं की पूर्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपको हर प्रकार का लाभ और प्रतिष्ठा मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्यति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उन्नति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शिक्षा उत्तम होगा और सट्टे में लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शादी, साझेदारों से लाभ तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, संबंधियों से सहायता तथा जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : [contact@horoscopecart.com](mailto:contact@horoscopecart.com)**

**Website : [www.horoscopecart.com](http://www.horoscopecart.com)**



**अंतर्दशा :- राहु - गुरु  
( 06/04/2023 - 29/08/2025 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/07/2020 को प्रारंभ होकर 24/07/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 06/04/2023 को प्रारंभ होकर 29/08/2025 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 3, 5, 7 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी, ज्ञानवान, धनी और बुद्धिमान बनेंगे। पर्याप्त संख्या में उत्तम मित्र होंगे। जरूरतमंदों की मदद करेंगे। इस अवधि में विकसित गुणों का समुचित उपयोग भविष्य तक लाभकारी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शनि  
( 29/08/2025 - 05/07/2028 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 24/07/2020 को प्रारंभ होकर 24/07/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 29/08/2025 को प्रारंभ होकर 05/07/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 9, 1, 4 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप नीतिवान और उद्यमी होंगे। आपके जीवनसाथी आपके ऊपर हावी हो सकते हैं। विदेश में निवास हो सकता है या वहां जायदाद खरीद सकते हैं। बहरेपन और उदरशूल से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है, शुभफल अवश्य मिलता है, मगर कुछ देरी से।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए नीलम चांदी या सोने की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार के दिन पूजा के बाद दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में, अंगूठी को कच्चे दूध



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : contact@horoscopecart.com**

**Website : www.horoscopecart.com**

और गंगाजल में धोकर शनि के वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - बुध  
( 05/07/2028 - 23/01/2031 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/07/2020 को प्रारंभ होकर 24/07/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 05/07/2028 को प्रारंभ होकर 23/01/2031 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान और सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांचों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विभिन्न विषयों के विद्वान हो सकते हैं। स्पष्टवादी हो सकते हैं। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार, धर्म और अध्यात्म में सफल होंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी। नेत्र के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।



**HoroscopeCart**

**Mobile / WhatsApp : +91-7835830918**

**E-Mail : contact@horoscopecart.com**

**Website : www.horoscopecart.com**